सही या ग़लत?

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ सम्पादक – प्यारेलाल अंक ३३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १४ सितम्बर, १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

अेक पाक कुरबानी

जहाँ तक मैं जानता हूँ, कलकत्ताके फ़िरक़ेवाराना पागलपनने, श्री सचिन मित्रके रूपमें पाक कुरबानीका अपना पहला टैक्स वसूल कर लिया है। सचिन मित्र आखिर तक साहसके साथ अहिंसाके सिद्धान्तको पालते रहे और अपनी जान देकर अुन्होंने अुसकी क़ीमत चुकाअी। पिछले साल सारे कलकत्ताको हिला देनेवाले अगस्त और नवम्बरके तूफ़ानोंमें सचिन मित्रने गांधी-सेवा-दलके मेम्बरके नाते, अपने शान्तिपूर्ण कार्योंका रेकार्ड क़ायम किया था। मौजूदा फ़िरक़ेवाराना दंगोंमें भी वे चुपचाप नहीं बैठ सके और पिछले शुक्रवार, पहली तारीखको वे तीन हिन्दू साथियोंको लेकर दंगेकी आगको बुझानेके अिरादेसे निकल पड़े। रास्तेमें मिलनेवाले कुछ मुसलमान दोस्तोंको अुन्होंने अपने साथ लिया और अुनके कहनेसे नाखुदा मस्जिदकी तरफ़ चल पड़े, जिसके अेक खतरनाक जगह होनेकी खबर मिली थी। चितपुर रोड़ और कैनिंग स्ट्रीटके चौराहेपर अिस शान्ति-दलको दंगाअी मुसलमानोंके अेक गिरोहने घेर लिया। सचिन मित्र और अुनके हिन्दू साथियोंको शान्ति-दलसे बाहर खींच लिया गया और अुस पागल बनी हुअी भीड़ने सचिन मित्रको छुरा भोंक दिया और अुनके साथियोंको बुरी तरहसे घायल कर दिया। अुनके मुसलमान साथियोंने अुन्हें बचानेकी कोशिश की; मगर भीड़ने अुनकी अेक न चलने दी। अुनमेंसे कुछको चोटें भी आअीं। मुसलमान दोस्तोंने सचिन मित्रको अेक पुलिस जीपकारमें अस्पताल पहुँचाया। वहाँ अुन्हें आराम होनेकी भी खबर मिली थी; मगर कल दोपहरसे अुनकी तबियत बिगड़ने लगी। आज सबेरे (ता० ३को) गांधीजीने, अुनके साथ कलकत्ता आअी हुअी दो लड़कियोंसे कहा कि वे अस्पताल जाकर सचिन बाबूको देख आवें, मगर अुनके जानेसे पहले ही खबर आ गअी कि बीमार मर गया है।

वे सिर्फ़ ३८ बरसके थे। अुन्होंने पूरी तरहसे अपने आपको जन-सेवामें लगा दिया था। वे कलकत्ता युनिवर्सिटीके अेम० अे० थे व 'कांग्रेस साहित्य-संघ'के अुत्साही मेंबर थे, जहाँ कांग्रेस-सम्बन्धी साहित्य तैयार किया जाता है। सन् १९४२में अुन्होंने 'भारत छोड़ो' आन्दोलनमें ज़ोरोंसे हिस्सा लिया और जेलसे छूटनेके बाद 'बंगीय छात्र-संसद' क़ायम करनेमें मदद दी। यह संसद विद्यार्थियोंकी अेक अैसी संस्था है, जो कांग्रेसके तामीरी–कामको आगे बढ़ाती है। सचिन मित्र अक्सर अलग-अलग बस्तियोंमें कातनेका प्रदर्शन कराते थे। पिछली अप्रेल तक वे टिपरा जिलेके हेमचर नामक स्थानमें ठक्कर बापाके केम्पमें काम करते थे। स्वभावसे ही अुनमें सौंदर्यका अनुभव करनेकी शक्ति थी। मीठे स्वभावके होनेके कारण अुनके सभी दोस्त अुन्हें प्यार करते थे और वे भी अुनकी छोटीसे छोटी सेवा करनेके लिअे हमेशा तैयार रहते थे।

सचिन मित्रकी कुरबानी स्व० गणेशशंकर विद्यार्थीकी कुरबानीकी याद दिला देती है। अगर हिन्दुस्तानकी आज़ादीको टिकाये रखना है, तो हमें अैसी बहुतसी कुरबानियाँ करनी होंगी।

गांधीजीने सचिन मित्रकी विधवाको हिन्दुस्तानीमें भेजे हुअे अपने संदेशमें लिखा था — "सचिन मित्र अमर हो गये हैं। अैसी मौतपर दुःख मनानेके बजाय आनन्द मनाना चाहिये। आप अुनके कदमोंपर चलकर अुनके प्रति रहनेवाले अपने प्यारका अिज़हार कर सकती हैं।"

अिस अुदाहरणसे अुन लोगोंकी आँखें खुल जानी चाहियें, जिन्होंने अपने ही दोस्त और मददगारका खून करनेकी नादानी की। अिससे पता चलता है कि गुस्सेसे पागल हो जानेसे किसीको कभी फायदा नहीं होता। अक्सर अुससे अैसा नुक़सान होता है, जिसे कभी पूरा नहीं किया जा सकता; जैसा कि अिस मामलेमें हुआ है।

कलकत्ता, ३–९–'४७
(अंग्रेजीसे)

प्यारेलाल

स्मृतीश बेनरजी

शान्तिने अपना कर वसूल कर लिया है और यह अच्छी बात है कि अुसके लिअे अपनी जान देनेवाले लोगोंकी कमी नहीं मालूम हुअी है।

स्मृतीश बेनरजी अपने कुछ दोस्तोंके साथ ३ सितंबरको किसी कामपर से लौट रहे थे। रास्तेमें अुन्हें स्कूलके लड़के और लड़कियोंका अेक शान्ति-जुलूस मिला, जो पार्क सर्कसकी तरफ़ बढ़ रहा था। स्मृतीशको अुनके वहाँ जानेमें खतरा दिखाअी दिया, क्योंकि सारे कलकत्तेका वातावरण अभी तक बहुत खिंचा हुआ था। वे अपने दोस्तोंके साथ जुलूसके पहले मोटरमें आगे बढ़े और लड़कोंसे कुछ मिनट पहले सरक्यूलर रोड और पार्क स्ट्रीटके संगमपर पहुँच गये। स्मृतीश और अुनके दोस्त मोटरसे अुतरे और अुन्होंने वहाँ जमा हुअे कुछ मुसलमानोंसे बातें कीं। जब अुन्हें पता चला कि वहाँका वातावरण दुश्मनीसे भरा हुआ है, तो अुन्होंने लड़कोंके पास यह खबर पहुँचवा दी कि वे आगे न बढ़ें।

करीब करीब अुसी समय अुस जुलूसपर हमला किया गया और लड़के व लड़कियाँ भागने लगीं। स्मृतीश और सुशील दासगुप्ताने दौड़कर लड़कियोंको मिलानेकी कोशिश की। लोगोंने आखिरी बार स्मृतीशको लड़कियोंको तेजीसे किसी सुरक्षाकी जगह ले जानेकी कोशिश करते हुअे देखा। अुनके कमीजपर खूनका भद्दा दाग था। बादमें स्मृतीशका शरीर अस्पतालमें लाया गया और सुशीलके शरीरपर छुरेके पाँच घाव पाये गये, जिनके कारण अुनकी हालत आज भी नाजुक बनी हुअी है।

मरते समय स्मृतीशकी अुमर ३८ बरसकी थी। १८ सालकी अुमरसे ही वे सियासी काममें लगे हुअे थे। वे बंगालके किसान आन्दोलनमें सक्रिय भाग भी लेते थे और बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीकी किसान-अुप-समितिके मेम्बर थे। स्मृतीश दो बार जेल जा चुके थे। लेकिन अुनकी कुरबानी आखिरी हदपर तब पहुँची, जब शान्ति और साम्प्रदायिक मेल-मिलापने अुनसे सबसे बड़ी कुरबानी कराअी। वे अिस कुरबानीके लायक थे।

कलकत्ता, ७–९–'४७
(अंग्रेजीसे)

निर्मल कुमार बसु

www.vinoba.in

कलकत्तामें

जब मैं नोआखालीकी बिगड़ती हुअी हालतके बारेमें गांधीजीको सूचना देने और अुनकी सलाह लेनेके लिअे, मेरे साथ काम करनेवाले अपने दोस्त श्री चारुभूषण चौधरीके साथ कलकत्ता आया, तब क़रीब ६ महीनेके बाद मुझे अेक बार फिरसे गांधीजीका पुराना, परिचित चेहरा देखनेका और अुनकी पुरानी, परिचित आवाज़ सुननेका सौभाग्य मिला। अगरचे कलकत्तामें फिरक़ेवाराना दोस्तीका अुत्साहभरा वातावरण नज़र आता था, मगर गांधीजीका मन, जो दिलोंमें छिपे हुअे चोरको पहचाननेमें कभी ग़लती नहीं करता, बेचैन बना हुआ था। पंजाबसे लगातार अुनके पास आनेवाली डरावनी खबरोंके बावजूद, गांधीजीने कुछ हिचकिचाहटके बाद नोआखाली जाना तय कर लिया। अपने दोस्तोंसे अुन्होंने पूछा—"मैं यहाँसे कल सबेरे रवाना होअूँ या परसों?" और दूसरा दिन अुनकी रवानगीके लिअे तय हो गया। जब अिन्सानकी देखनेकी ताक़त चुक जाती है, तब भी जो चौकसी करता रहता है, अुस भगवानने अुस दिन शामको चेतावनीका सिगनल दिया। और जब मैं अुस रातको गांधीजीसे मिला, तो अुन्होंने मुझसे कहा—"आज शामकी घटनाओंके बाद नोआखाली जानेका मेरा निश्चय पलट गया है। जब कलकत्ता जल रहा हो, तब मैं नोआखाली या और किसी जगह नहीं जा सकता। आजकी घटना मेरे लिअे भगवानका किया हुआ अिशारा और अुसकी दी हुअी चेतावनी है। अिसलिअे फिलहाल तुम्हें मेरे बग़ैर ही नोआखाली लौटना होगा। तुम नोआखालीके लोगोंसे कह सकते हो कि अगर मेरे साथी किसी कारणसे वहाँ नहीं रह सकते, तो वे लोग ज़रूर मुझे अपने बीचमें पायेंगे।"

और तब अचानक अुन्होंने अिस बातका अिशारा किया कि अगर यह दंगेकी आग फैली, तो अुनके लिअे अुपवास करनेके सिवा दूसरा कोअी रास्ता नहीं रह जायगा। "क्या मैंने अक्सर कहा नहीं है कि अभी दूसरा अुपवास करना मेरे लिअे बाकी है?" दूसरा दिन गांधीजीका मौन-दिन था। शहरमें होनेवाली घटनाओंकी बुरी बुरी खबरें आने लगीं। दिनमें कअी प्रतिनिधि-मंडल (डेपुटेशन) गांधीजीसे मिलने और अुनसे यह पूछनेके लिअे आये कि अिस आगको बुझानेके लिअे वे लोग क्या करें। गांधीजीने सबको यही जवाब दिया कि "दंगाअियोंके बीचमें जाओ और अुन्हें पागलपन करनेसे रोको, या अिस कोशिशमें अुनके हाथों अपनी जान दे दो; मगर अपनी नाकामीकी खबर देनेके लिअे ज़िन्दे वापिस मत आओ। यह परिस्थिति ऊँची श्रेणीके लोगोंकी क़ुरबानी चाहती है। अेक स्व० गणेशशंकर विद्यार्थीको छोड़कर अभी तक सिर्फ अैसी ही श्रेणीके लोग अिसके शिकार हुअे हैं जिन्हें कोअी जानता पहचानता भी नहीं था। ऊँची श्रेणीके लोगोंकी सिर्फ़ यह अेक क़ुरबानी काफ़ी नहीं है।"

ये शब्द कहते हुअे भी गांधीजी अपने मनमें सोच रहे थे कि जो चित्र वे अुन लोगोंके सामने रख रहे हैं, अुसमें अुनकी जगह कहाँ है। क्योंकि अुन्होंने आगे कहा—"जो कुछ करनेके लिअे मैंने अुन लोगोंसे कहा है, अुसे मैं आज सचमुच नहीं कर सकता। मुझे अैसा करने नहीं दिया जायगा। यह बात मैं कल देख चुका हूँ। अगर मैं पागल बनी हुअी भीड़में गया, तो हरअेक मेरी हिफ़ाज़त करेगा। मैं महज़ अपनी जिस्मानी थकावटकी वजहसे भले गिर पड़ूँ। अितना तो कुछ भी नहीं है। अेक सिपाहीके लड़ाअीके बीचोंबीच थक जानेसे काम नहीं चलेगा।" मगर खतरेके वक़्त चुपचाप बैठे रहना गांधीजीके स्वभावमें नहीं है। जब गांधीजीके अेक प्यारे बूढ़े दोस्त अुस रात अुनसे मिलनेके लिअे आये, तब तक वे अपना निश्चय कर चुके थे। गांधीजीने अुनके आनेसे पहले ही अपने अुपवासके बारेमें अेक बयान तैयार कर लिया था, जिसमें अुन्होंने अुपवास करनेके अपने कारण दिये थे। अिस बयानको ध्यानसे पढ़ते हुअे अुन दोस्तने अपनी हमेशाकी प्यार-भरी चुहलके साथ कहा—"आप जो क़दम अुठाना चाहते हैं, अुसमें मेरे समर्थनकी अुम्मीद मत कीजिये।"

अिसके बाद अुन दोनोंने मिलकर पूरी परिस्थितिपर गहराअीसे विचार किया और अेक-अेक बातकी विस्तारसे छानबीन की।

अुन दोस्तने पूछा—"क्या आप गुण्डोंके खिलाफ़ अुपवास करेंगे?"

गांधीजीने जवाब दिया—"यह आग गुण्डोंके द्वारा नहीं, बल्कि अुन लोगोंके द्वारा भड़काअी गअी है, जो गुण्डे बन गये हैं। हम लोग ही गुण्डे तैयार करते हैं। हमारी सहानुभूति और मंद समर्थनके बिना गुण्डे टिक नहीं सकते। मैं अुन लोगोंके दिलोंको छूना चाहता हूँ, जो गुण्डोंकी पीठपर हैं।"

अुन दोस्तने दलील की—"मगर क्या आपको अिसी समय अुपवास करनेकी ज़रूरत है? कुछ समयके लिअे ठहरकर आप देखते क्यों नहीं कि क्या होता है?"

अिसपर गांधीजीने जवाब दिया—"अुपवासका या तो यही वक़्त है या फिर वह कभी नहीं आयेगा। बादमें अुपवास करनेसे बहुत देर हो जायगी। अल्पसंख्यक मुसलमानोंको आज खतरनाक हालतमें नहीं छोड़ा जा सकता। अगर मेरे अुपवाससे कोअी फ़ायदा होना है, तो अुसे मुसलमानोंको मौजूदा खतरेसे बचाना ही चाहिये।"

आगे बोलते हुअे गांधीजीने कहा—"मैं जानता हूँ कि अगर मैं कलकत्तापर क़ाबू कर सकूँ, तो मैं पंजाबकी समस्याको भी हल कर लूँगा। अगर मैं अिस वक़्त आगा-पीछा करूँगा, तो यह आग बहुत जल्दी फैल जायगी। मैं साफ़ तौरपर देख सकता हूँ कि अुस हालतमें दो या तीन ताक़तें हमपर कब्ज़ा कर लेंगी और अिस तरह हमारा आज़ादीका थोड़े दिनोंका सपना खत्म हो जायगा।"

अुन दोस्तने दलील की—"मगर मान लिजिये कि अिस अुपवासमें आपकी मृत्यु हो गअी, तो यह आग अिससे भी ज्यादा भयंकर नहीं हो जायगी?"

गांधीजीने जवाब दिया—"अुसे देखनेके लिअे कमसे कम मैं ज़िन्दा नहीं रहूँगा। मैं अपना फ़र्ज़ अदा कर चुकूँगा। अिन्सान अिससे ज्यादा कुछ कर भी नहीं सकता।"

अिस जवाबसे अुन दोस्तने हथियार डाल दिये।

गांधीजीके बयानका वह हिस्सा पढ़ते हुअे, जिसमें अुन्होंने अपने अुपवासके दरमियान पानीके साथ नीबूका रस लेनेकी बात लिखी थी, अुन दोस्तने मानो ज़ोरसे बोलकर खुद ही सोचते हुअे कहा—"मगर जब आप अपने आपको पूरी तरहसे भगवानके हाथोंमें सौंप रहे हैं, तब पानीके साथ नीबूका रस भी क्यों लिया जाय?"

गांधीजीने तुरन्त जवाब दिया—"आप ठीक कहते हैं। पानीके साथ नीबूका रस लेना मेरी कमज़ोरी है। जब मैं यह बात लिख रहा था, तभी मेरा मन अिसका विरोध कर रहा था। अेक सत्याग्रही, जब कोअी मक़सद अपने सामने रखकर अुपवास करता है, तो अुसे निश्चित वक़्त तक अपना मक़सद पूरा करनेके लिअे ज़िन्दा रहनेकी अुम्मीद रखनी ही चाहिये।"

और अिस तरह बयानके अिस हिस्सेमें अुपवासके दरमियान पानीके साथ खट्टे नीबूका रस लेनेकी बात लिखी थी, अुसे काट दिया गया और शुद्ध श्रद्धाके साहसकी शुरूआत हुअी।

यह घटना सोमवारकी रातकी है। दो दिन बाद कलकत्ता-मुस्लिम-लीगके अेक मेम्बर गांधीजीसे मिले और अुनसे बिनती की कि वे अपना अुपवास तोड़ दें। अुन्होंने कहा—"हमारे बीचमें आपका रहना ही हमारे लिअे काफ़ी है। वह हमारी हिफ़ाज़तकी गारण्टी है। अुससे हमें महरूम न करें।"

गांधीजीने कहा—"पिछले दिन मेरे हाज़िर रहते हुअे भी फ़साद नहीं रुका। अुन लोगोंके लिअे मेरे शब्द जैसे अपना सारा प्रभाव खो चुके थे। अब तो मेरा अुपवास तभी टूटेगा, जब पिछले १५ दिनोंकी पुरानी शान्ति फिरसे लौट आयेगी। अगर मुसलमान सचमुच मुझे प्यार करते हैं और मुझे अपना मददगार मानते हैं, तो अुन्हें बदला लेनेकी भावनाको छोड़कर मेरे प्रति रहनेवाले अपने

www.vinoba.in

अक़ीदेको ज़ाहिर करना चाहिये, फिर चाहे पूरा कलकत्ता ही पागल क्यों न हो अुठे। जब तक यह सब नहीं होता, मुझे अपनी अग्नि-परीक्षाको जारी रखना ही चाहिये।"

आखिर वे दोस्त भारी दिल लेकर चले गये। अुनके जानेके बाद गांधीजीने कहा—"दंगा-फ़साद करनेवाले लोग मेरी जान बचानेके लिअे नहीं, बल्कि अपने दिलोंके सचमुच बदल जानेकी वजहसे अपने बुरे काम बन्द करें। सभी लोग अिस बातको समझ लें कि शान्तिका बहाना करके वे मुझे सन्तुष्ट नहीं कर सकते। मैं अैसी क्षणिक शान्ति नहीं चाहता जिसके बाद पहलेसे भी ज़्यादा भयंकर अशान्ति हो। अुस हालतमें मुझे बिनाशर्त आमरण अुपवास करना पड़ेगा।"

अिसके बाद चमत्कार दिखाअी पड़ा। जैसे जैसे बोझिल घंटे बीतते गये और अुपवास-शैयापर पड़े हुअे अुस दुबले पतले छोटेसे अिन्सानकी ताक़त बूँद बूँद करके घटने लगी, वैसे ही वैसे सारे सम्बन्धित लोगोंके दिलोंका मंथन होने लगा और सारा छिपा हुआ असत्य अूपर आने लगा। लोग गांधीजीके पास आये और अुनके सामने अुन्होंने अैसी-अैसी बातें क़बूल कीं, जो वे किसी भी शख़्सके सामने कभी नहीं कहते। गांधीजी अपनी जिस क़ीमती ज़िन्दगीको भाअी-भाअीके बीच होनेवाली अशान्तिके जुर्मानेकी तरह दे रहे थे, अुसे बचानेके लिअे हिन्दू-मुसलमान दोनों मिलकर कोशिश कर रहे थे। दोनों फ़िरक़ोंके बीच फिरसे मेल-मिलाप क़ायम करनेके लिअे सभी फ़िरक़ोंके लोगोंके सम्मिलित जुलूस शहरके दंगा-पीड़ित हिस्सोंमें घूमे। क़रीब पचास आदमियोंका अेक समूह, जिसे शहरके फ़सादी लोगोंपर काबू करनेका श्रेय दिया जा सकता है, ता० ४ को गांधीजीसे मिला और अुन्हें वचन दिया कि वे शीघ्र ही दंगा-फ़साद करनेवालोंपर क़ाबू कर लेंगे। अुन्होंने गांधीजीसे कहा कि पिछले अितवारको जिन लोगोंने आपके कैम्पमें हुल्लड़ मचाया था, अुनके नेताओंको पहलेसे ही ढूँढ़कर कावूमें कर लिया गया है। अुनमें वह आदमी भी है जिसने आपपर लाठी चलाअी थी और जो आपको लगते-लगते बची थी। वे सब अपने आपको आपके हाथोंमें सौंप देंगे और अुन्हें जो भी सज़ा दी जायगी अुसे स्वीकार करेंगे। अुन्होंने गांधीजीसे पूछा—"क्या आप हमारे अिस तरह भरोसा दिलानेपर अपना अुपवास नहीं तोड़ेंगे, ताकि हम अुपवासके बोझसे हलके होकर काम करने लगें? अगर आप नहीं तोड़ते, तो अुसे तोड़नेकी आपकी शर्त क्या है?" गांधीजीने अुन्हें जवाब दिया—"अेक तो आप मुझे यह भरोसा दिला दें कि अिस शहरमें फिर कभी फ़िरक़ेवाराना पागलपनकी बीमारी नहीं फैलेगी, फिर चाहे पूरे पच्छिमी बंगालमें और अुसकी वजहसे सारे हिन्दुस्तानमें दंगेकी आग क्यों न भड़क अुठे। दूसरे, मुसलमान लोग खुद मेरे पास आवें और मुझसे कहें कि अब वे पूरी तरह सुरक्षित हैं, अिसलिअे मुझे और ज़्यादा दिनों तक अुपवास नहीं करना चाहिये; तभी मैं अपना अुपवास तोड़ सकूँगा। अगरचे मैं चाहता हूँ कि शहरके सारे गुंडोंपर क़ाबू कर लूँ, मगर मुझे अुम्मीद नहीं है कि मैं अैसा कर सकूँगा, क्योंकि अिसमें जितनी पवित्रता, अलगाव, और दृढ़ निश्चयकी ज़रूरत है, अुतना मुझमें नहीं है। मगर यदि मैं अुनके दिलोंसे फ़िरक़ेवाराना दुश्मनीका ज़हर नहीं निकाल सका, तो मुझे लगेगा कि यह ज़िन्दगी जीने लायक नहीं है और मैं अुसे ज़्यादा लंबानेकी परवाह नहीं करूँगा। आप लोगोंने मेरे अुपवासके दबावकी जो चर्चा की है, अुसे मैं समझ न सका। अगर आपकी कही हुअी बातें सीधे आपके दिलोंसे निकली हैं, तो आपको दबाव क्यों महसूस होना चाहिये?

"अगर अपने पक्के विश्वासकी वजहसे नहीं, बल्कि मेरे अुपवासके कारण कोअी क़दम अुठाया जायगा, तो वह आपके लिअे बोझ बन जायगा। मगर यदि आपके दिल और दिमागमें पूरा सहयोग है—जो बात आप सोचते हैं, अुसे दिलसे मंज़ूर भी करते हैं—तो आपको किसी तरहका दबाव महसूस नहीं होना चाहिये। मेरे अुपवासका काम हमें आलसी और सुस्त बनाना नहीं, बल्कि हमारे दिलोंको पवित्र करना और हमारी काहिली और दिमाग़ी आलसको जीतकर हमारी शक्तियोंको खुलकर काम करनेका मौक़ा देना है।

"मेरा अुपवास बुराअीकी शक्तियोंको अलग कर देता है। और जैसे ही वे अलग होती हैं, बुराअीका खात्मा हो जाता है, क्योंकि बुराअी अपने पाँवोंपर अकेले खड़ी नहीं रह सकती। अिसलिअे मैं अुम्मीद करता हूँ कि आप मेरे अुपवासका बोझ महसूस करनेके बजाय अुसकी प्रेरणासे और ज़्यादा अुत्साहके साथ काम करेंगे।"

डेपुटेशनने यह महसूस किया कि जब तक हम गांधीजीको अिस बातकी गारण्टी नहीं दिला सकते कि शहरमें फिरसे गड़बड़ी नहीं होगी, तब तक हमारा अुनसे अुपवास छोड़नेकी बिनती करना ठीक नहीं। बादमें तीसरे पहर अुनमेंसे कअी लोग, जिन्होंने अितवारकी रातमें गांधीजीकी छावनीमें गड़बड़ी पैदा की थी, गांधीजीके पास आये और अुनके हाथमें अपने आपको सौंप दिया। यह अुनका सच्चा पछतावा मालूम होता था।

अुसी शामको सारी जातियोंकी नुमाअिन्दगी करनेवाला कलकत्ताके मशहूर शहरियोंका दूसरा डेपुटेशन गांधीजीसे मिलने आया। अुसमें शहीद साहब, श्री अेन० सी० चटरजी और सरदार निरंजनसिंह तालिब भी थे। अुन्होंने गांधीजीसे कहा कि हम शहरके सारे दंगेवाले हिस्सोंमें गये थे। सब जगह शान्ति है। हमें पूरी आशा है कि शहरमें फिरसे कहीं गड़बड़ी नहीं होगी। अिस समयकी गड़बड़ी दरअसल साम्प्रदायिक नहीं थी; वह तो गुण्डोंका काम थी। अुन्होंने गांधीजीसे अुपवास छोड़नेकी बिनती की। गांधीजीने अुन्हें मीठा अुलाहना देते हुअे कहा कि किसी भी गड़बड़ीकी सारी जिम्मेदारी गुण्डोंपर डाल कर अपने आपको अुसकी नैतिक जिम्मेदारीसे अलग रखनेकी आदत ठीक नहीं है। यह खतरनाक बात है। अुन्होंने अपने बचपनके अनुभव सुनाकर यह दिखाया कि औसत शहरी या "दौलत वग़ैराका जोखिम रखनेवाले आदमी"की बुजदिली या मन्द हमदर्दी किस तरह गुण्डोंको बदमाशी करनेकी ताकत और हिम्मत देती है। अुन्होंने कहा—"मेरे अुपवाससे आपको ज़्यादा चौकस, ज़्यादा सच्चे, ज़्यादा सावधान और अपनी वाणीमें ज़्यादा नपेतुले बनना चाहिये।

बादमें डेपुटेशनकी अुपवास छोड़नेकी बिनतीको लेकर गांधीजीने अुनसे दो सीधे सवाल पूछे—"क्या आप लोग पूरी अीमानदारीके साथ मुझे यह विश्वास दिला सकते हैं कि कलकत्तामें फिर कभी साम्प्रदायिक पागलपनका अुभार नहीं आयेगा? क्या आप यह कह सकते हैं कि कलकत्ताके शहरियोंके दिल सचमुच अैसे बदल गये हैं कि वे आगे कभी साम्प्रदायिक पागलपनका समर्थन नहीं करेंगे या अुसे बरदाश्त नहीं करेंगे? अगर आप मुझे यह गारण्टी नहीं दे सकते, तो मुझे अपना अुपवास चालू रखने दीजिये; क्योंकि आजके साम्प्रदायिक दंगेके बाद अगर दूसरा दंगा हुआ, तो मुझे कभी न टूटनेवाला आमरण अुपवास करना पड़ेगा।" अुन्होंने आगे कहा—"लेकिन खयाल कीजिये कि आपकी गारण्टीके बाद भी शहरमें फिर साम्प्रदायिक दंगा हुआ—क्योंकि आप सर्वज्ञ तो नहीं है—तो क्या आप यह वचन देंगे कि अैसा होनेपर आप लोग सब कुछ सहकर भी कम तादादवाली जातिका बाल भी बाँका न होने देंगे? क्या आप यह वचन देंगे कि अैसा होनेपर साम्प्रदायिक आगको बुझानेमें आप जान तक दे देंगे, लेकिन अपनी नाकामयाबीकी रिपोर्ट देनेके लिअे ज़िन्दे नहीं लौटेंगे? मैं आप लोगोंसे यह वचन दस्तावेजके रूपमें चाहता हूँ। अगर आप लेखीमें यह गारण्टी मुझे दे सकें, तो मैं अपना अुपवास तोड़ दूँगा। लेकिन अगर आपके मुँहपर अेक बात है और दिलमें दूसरी, तो मेरी मौतका पाप आपके सिर होगा। बिना सोचे-विचारे जल्दीमें कोअी बात कहनेके बजाय मुझे कुछ दिन और अपना अुपवास चालू रखने दीजिये। अुससे मुझे नुकसान नहीं होगा। जब कोअी आदमी अुपवास करता है, तब भगवान ही अुसे टिकाये रखता है, न कि काफी मात्रामें पिया जानेवाला पानी।"

(पृष्ठ २७० पर)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
१४ सितम्बर १९४७

सही या ग़लत ?

[गुजरातीमें मुझे लिखे हुअे अेक खतका सारांश मैं नीचे देता हूँ।]

"१५ सितम्बर १९२७ के 'यंग अिण्डिया'में आपका मद्रासमें दिया हुआ जो भाषण छपा है, अुसमें आपने कहा है कि जो धर्म, शुद्ध अर्थके ख़िलाफ़ हो, वह धर्म नहीं है और जो अर्थ धर्मके ख़िलाफ़ हो, वह शुद्ध नहीं है; अिसलिअे वह छोड़ देने लायक़ है।

"मैं तो जानता ही हूँ कि अेक अरसेसे आपका यह मत रहा है। मगर अिसे सबने माना कब है? अिसलिअे मुझे लगता है कि आज धर्मके नामपर होनेवाली ख़ूँरेज़ीको शान्त करनेमें आप जो अपना सारा वक़्त और ताक़त खर्च कर रहे हैं, यह ठीक नहीं है। आपका तामीरी कार्यक्रम आज कहाँ चल रहा है? कांग्रेसके हाथमें आज हिन्दुस्तानके बड़े हिस्सेकी बागडोर है। अब तो आज़ादी मिल गअी। अंग्रेज चले गये। तब फिर आप अपने रचनात्मक कामको आगे बढ़ाकर यह साबित करनेमें पूरा वक़्त क्यों नहीं लगाते कि धर्म और अर्थ दो विरोधी चीजें नहीं हैं? आजकल होनेवाले आर्थिक अन्यायके ख़िलाफ़ आप कुछ भी नहीं लिखते, अिससे भले लोग यही मानते हैं कि कांग्रेस-सरकार जो कुछ करती है, अुसमें आपका आशीर्वाद होता ही है। लेकिन मैं तो यह मानता हूँ कि आप ही तामीरी-कामके जन्मदाता होकर आज अुसे दफ़ना रहे हैं। आज खादी या ग्रामोद्योगके अर्थशास्त्रके आधारपर स्वावलम्बनसे चलनेवाली अेक संस्था भी कहीं देखनेमें नहीं आती।"

अूपर दी हुअी बात आवेशमें लिखी गअी है, अिससे लिखनेवाले भाअी आधी सच बात ही कह सके हैं। खास बात यह है कि हिन्दू-मुस्लिम अेकताकी बात मेरे मनमें तबसे समाअी हुअी है, जब कि खादी और अुसके आसपासके ग्राम-अुद्योगोंकी बात मेरे सपनेमें भी नहीं थी।

जब मैं बारह वर्षकी अुम्रमें अेक मामूली विद्यार्थीकी तरह पहली अंग्रेजी क्लासमें भर्ती हुआ था, तभीसे मैं अपने मनमें यह मानने लगा था कि हिन्दू, मुसलमान, पारसी, सब अेक ही हिन्दुस्तानकी सन्तान हैं और अिसलिअे अुनमें आपसमें भाअीचारा होना चाहिअे। यह सन् १८८५से पहलेकी बात हुअी, जब कि कांग्रेसका जन्म भी नहीं हुआ था। अिसके सिवा यह अेकता क़ायम करनेका काम तामीरी-कामका अेक अैसा अंग है, जिसे अलग नहीं किया जा सकता। अिसके लिअे मैंने बहुतसे खतरे मोल लिये हैं। और मैं मानता हूँ कि अगर यह न हो, तो दूसरे तामीरी-काम चल ही न सकें। कम-से-कम मेरे हाथों तो चल ही न सकें; मुझसे यह नहीं हो सकता। खत लिखनेवाले भाअीकी दलीलके मुताबिक़ तो मुझे नोआखाली नहीं जाना चाहिये था, बिहार नहीं दौड़ना था। यानी जो काम मैं जानता हूँ, जिसे मैंने बरसोंसे किया है, अुस कामको कसौटीके वक़्त भूल जाअूँ, यह कैसे हो सकता है? अिसे भूलकर मैं दूसरे तामीरी-कामके पीछे दौड़ूँ तो यह अपना धर्म छोड़ना होगा, और अिससे फायदा तो कुछ होनेवाला है नहीं।

जिन कांग्रेस-सेवकोंके हाथमें आज बागडोर है, वे मेरे साथी हैं। यह भी कहा जा सकता है कि अिन सबने मेरे साथ ही कांग्रेसमें तरक़्क़ी की और अूँचे अुठे। अगर मैं अपना अर्थशास्त्र अिनके गले न अुतार सका, तो फिर किसे समझा सकूँगा? शासनकी बागडोर हाथमें आनेके बाद अुनकी बुद्धि क़बूल नहीं करती कि वे जनतासे खादी-शास्त्र मंजूर करा सकेंगे या ग्राम-अुद्योगोंके मारफ़त गाँवोंको नअी ज़िन्दगी दे सकेंगे। खत लिखनेवाले भाअीका सुझाव है कि मुझे श्री जाजूजीको और श्री कुमारप्पाको हिन्दुस्तानकी बागडोर लेनेके लिअे तैयार करना चाहिये। यह कैसा भ्रम है? अिस तरह किसीको तैयार करनेवाला मैं कौन होता हूँ? पंचायत-राज अेक हाथसे नहीं चल सकता। जिनके हाथोंमें शासन है, अुनकी जगह लेनेवाला कोअी ज़्यादा बलवान और बाहोश आदमी हो, तो आज अुन्हें हटना पड़े। जहाँ तक मैं अिन लोगोंको जानता हूँ, वहाँ तक कह सकता हूँ कि ये लोग हुकूमतके भूखें नहीं हैं। अिसलिअे जब कोअी ज़्यादा लायक़ आदमी पैदा होगा, तब अुसे पहचाननेमें अिन्हें देर नहीं लगेगी और ये लोग ख़ुशीसे अुसके हाथमें हुकूमत सौंपकर अपना जीवन सफल मानेंगे।

अैसी भूल कोअी न करे कि मैं यह जगह ले सकता हूँ। अगर मैं प्रधान बननेके लिअे तैयार होअूँ, तो ये लोग मेरा स्वागत करेंगे, मगर मुझमें राम नहीं है। मैं खुद रामका पुजारी हूँ, अुसका भक्त हूँ। मगर रामके सब भक्त, राम थोड़े ही बन सकते हैं? हमें तो राम रखे, अुसी तरह रहना चाहिये।

अिसके सिवा, यह बात ध्यान देने लायक़ है कि जो काम मैं अपने तरीक़ेसे कर रहा हूँ, वही काम अुनके अपने तरीक़ेसे करनेमें ही अुनका सारा वक़्त जाता है। क्योंकि वे समझते हैं कि जब तक फ़िरक़ेवाराना सवाल नहीं सुलझता, तब तक हिन्दुस्तानमें शान्ति नहीं हो सकती। और जब तक शान्ति नहीं होगी, तब तक प्रजाके दूसरे सारे काम यों ही पड़े रहेंगे।

अखीरमें, मुझे खत लिखनेवाले भाअीने अपने जैसे विचार प्रकट किये हैं, वैसे विचार रखनेवालोंको समझना चाहिये कि अगर रचनात्मक कार्यक्रमपर करोड़ों अिन्सानोंसे अमल कराना हो, तो अिसके लिअे हजारों कार्यकर्ताओंकी ज़रूरत है; भले ही यह योजना अेक अिन्सानके मगज़से निकली हो। लोगोंके सामने अिसे रखे बरसों बीत गये हैं। अखिल भारत-चरखा-संघ, ग्राम-अुद्योग-संघ, गो-सेवा-संघ, हिन्दुस्तानी प्रचार-संघ, आदिवासी-सेवा-संघ, हरिजन-सेवक-संघ वग़ैरा पैदा हुअे। वे आज ज़िन्दा हैं और अपनी ताक़तके मुताबिक़ काम कर रहे हैं। ये सब धर्म और अर्थका समीकरण समझ चुके हैं। फ़िरक़ेवाराना मेल-मिलापका काम करते हुअे, मैं अूपरके सारे कामोंमें पहले जैसा ही रस ले रहा हूँ, शक्तिके मुताबिक़ अुसमें अपना सिर भी खपा रहा हूँ। अब अिससे ज़्यादा मुझसे अुम्मीद भी न करनी चाहिये। आज जिसे मैं अपना फ़र्ज़ मान बैठा हूँ, लालचमें पड़कर अुससे मुझे डिगना नहीं चाहिये। अूपरकी चेतावनी देनेके बदले, मुझे सावधान करनेके बदले, यह ज़रूरी है कि खत लिखनेवाले भाअी जैसे सभी लोग सावधान होकर अपने काममें लग जायँ।

मैंने सैकड़ों बार कहा है कि हमारे हाथमें हुकूमतका होना ज़रूरी नहीं है। जिन्हें हम हाकिम बनाते हैं, अुन्हें सावधान रखना चाहिये। नेता तो गिनतीके होंगे, मगर जनता अपनी ताक़त और अपने धर्मको समझ ले और अुसके मुताबिक़ काम करे, तो सब कुछ अपने आप ठीक हो सकता है। हमें आज़ादी भोगते अभी तो सिर्फ़ अठारह दिन ही हुअे हैं, अितनेमें यह अुम्मीद कैसे की जा सकती है कि सारा काम अपने आप हो जाय? जिनके हाथोंमें जनताने हुकूमत सौंपी है, वे भी नअी परिस्थितिके लिअे पहलेसे तैयार नहीं हैं, बल्कि तैयार हो रहे हैं।

कलकत्ता, ४-९-'४७
(गुजरातीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

www.vinoba.in

अुपवास

गांधीजीने कलकत्ताके साम्प्रदायिक पागलपनको शान्त करने और लोगोंको समझदार बनानेके लिअे १ सितम्बर, १९४७ की रातमें ८ बजकर १५ मिनटपर अपना अुपवास शुरू किया और ४ सितम्बरको रातके ९। बजे सुहरावर्दी साहब द्वारा दिये गये मीठे नीबूके रसको पीकर अुपवास तोड़ दिया।

यह अुपवास कैसे और किन शर्त्तोंपर तोड़ा गया, अिस कहानीकी जमीन तैयार करनेके लिअे अिस अुपवासका अितिहास जानना ज़रूरी है।

१४ अगस्त, १९४७ से ३१ अगस्त तक कलकत्तामें शान्तिका राज रहा। ३१ की शामको गांधीजीके शान्ति-मिशनके खिलाफ दिखावा किया गया। दूसरे दिन सुबह शहरके कअी हिस्सोंमें फिरसे साम्प्रदायिक पागलपन भयंकर रूपमें फैल गया। अुस दिन सुबहसे ही गांधीजीके अुपवास करनेके आसार दिखाअी देने लगे थे। लेकिन अिसका आखिरी फैसला अुन्होंने सुबह ११ बजे किया, जब अुनके कहे मुताबिक अुनके दोस्त अुन्हें अिस बातका ठीक ठीक कारण नहीं बता सके कि अुन्हें अुपवास क्यों नहीं करना चाहिये। ७ बजे शामको गांधीजीने, अुपवासके पहले, आखिरी बार मीठा रस पिया और सवा आठ बजे खास शर्त्तोंपर तोड़ा जानेवाला अपना अुपवास शुरू किया।

गांधीजीका अुपवास शुरू हुआ। शायद कुछ तो अुनके अुपवासके कारण और कुछ अिसलिअे कि शहरके आम लोग, जिन्हें सालभर तक खतरेकी जिन्दगी बितानेके बाद शान्तिके दिन देखनेको मिले थे, नहीं चाहते थे कि साम्प्रदायिक आग फिर भड़क अुठे, दंगा तेजीसे शान्त हो गया। अिसलिअे ४ सितम्बरको सरकार और जनता गांधीजीके पास आकर यह रिपोर्ट दे सकी कि पिछले २४ घंटोंमें शहरमें अेक भी वारदात नहीं हुअी है। रिपोर्टों या प्रतिज्ञाओंके साथ पार्टियोंपर पार्टियाँ गांधीजीके पास आने लगीं और कमजोर हालत होनेपर भी गांधीजीने हर पार्टीसे धीमी आवाजमें बोलनेका आग्रह रखा। नेताजीके भाअी मशहूर डॉक्टर सुनील बसु गांधीजीसे यह बिनती करने आये कि आपको काफ़ी आराम लेना चाहिये और बोलना बिलकुल बन्द रखना चाहिये। लेकिन गांधीजीने अुनसे कहा कि मैं जरूरी बातचीत करना नहीं छोड़ सकता। शक्तिका अिस तरह कम होना जरूरी है। वह टाला नहीं जा सकता। मैं सचमुच जीना चाहता हूँ। लेकिन अुस कामको नुक़सान पहुँचाकर नहीं जिसे करना मेरा फर्ज़ है। जिस कामने मुझसे अुपवास कराया है और जिसके लिअे मैं जीता हूँ, अुसको मैं रोक नहीं सकता। अगर अुस कामको करते करते मेरी जिन्दगी खतम हो जाय, तो मुझे खुशी होगी।

यह सुबह साढ़े ग्यारह बजेकी बात है। अिसके कुछ मिनट बाद केन्द्रीय कलकत्ताके २७ दोस्त गांधीजीको देखने आये। पिछले सालके साम्प्रदायिक दंगोंमें गड़बड़ी फैलानेवाले लोगोंका विरोध करनेके लिअे कअी जगह संगठित गिरोह खड़े किये गये थे। यह पार्टी केन्द्रीय कलकत्ताके अैसे ही अेक गिरोहकी नुमाअिन्दा थी। शहरका यह हिस्सा सोमवारके दिन फिरसे सुलग अुठनेवाली साम्प्रदायिक आगका केन्द्र बन गया था। वे लोग गांधीजीको यह गारण्टी देनेके लिअे आये थे कि आगेसे शहरके हमारे हिस्सेमें कोअी वारदात नहीं होगी। अिसलिअे अब आपको अपना अुपवास तोड़ देना चाहिये, वर्ना हम सब आपके साथ हमदर्दी दिखानेके लिअे अुपवास करेंगे। गांधीजीने लम्बे समय तक अुन लोगोंसे चर्चा की। अुनके कहनेका सार यह था: आजके अिस मौकेपर हमदर्दीके अुपवासके लिअे कोअी गुंजाअिश नहीं है। हिन्दू और मुसलमान साल भर तक लड़ते रहे, जिसके अन्तमें देशकी बड़ी पार्टियोंने यह मंजूर कर लिया कि हिन्दुस्तान दो राज्योंमें बाँट दिया जाय। दोनों राज्योंमें हिन्दू और मुसलमान प्रजा है। अिस समय हर आदमीको देशको नया जीवन देनेके लिअे लोगोंमें समान नागरिकताकी भावना पैदा करनी चाहिये, ताकि लोग आज़ादीके फल चख सकें। अिसी मकसदके लिअे सबको काम करना चाहिये। अगर आप लोग सिर्फ मेरे प्राण बचानेके लिअे आये हैं, तो अुसकी कोअी कीमत नहीं है।

मेरे पूनाके अुपवासका, जो साम्प्रदायिक फैसलेमें मन चाहा सुधार हो जानेसे तोड़ दिया गया था, जिक्र करते हुअे कुछ लोगोंने यह कहा था कि 'वह सुधार हमारी' पसन्दका नहीं था, फिर भी आपको जिन्दा रखनेके लिअे हमने अुसे मान लिया था।' यह तरीका बिलकुल ग़लत था। अैसे अुपवास लोगोंकी आत्माको जगाने और अुनके मनकी जड़ताको दूर करनेके अिरादेसे किये जाते हैं। कीमतीसे कीमती जिन्दगीको बचानेके लिअे भी सत्यकी कुरबानी नहीं की जा सकती। अिसलिअे मैं आपको यह चेतावनी देना चाहता हूँ कि आप, लोगोंमें राज्यकी समान नागरिकताकी भावना पैदा करके हिन्दू और मुसलमानोंमें सच्चा अेका कायम कीजिये। यह अैसा राज्य होगा जिसमें हर आदमीको बिलकुल अेकसे हक होंगे। ये हक अैसे होंगे जो फर्ज़ अदा करनेसे मिलते हैं। अगर आप अिस मकसदसे काम करें और कुछ दिन बाद कलकत्ताके घबराये हुअे मुसलमानोंमें सुरक्षा और सलामतीका भरोसा पैदा कर सकें, तो मेरे अुपवास छोड़नेका समय आ सकता है। हालाँकि अिस समय मेरे कामका दायरा कलकत्तामें ही है, फिर भी मेरा मकसद हिन्दू-मुस्लिम सवालको अिस ढंगसे पूरी तरह हल करना है कि हिन्दुस्तानी संघ या पाकिस्तानके अल्पमतवाले — फिर अुनकी तादाद अेक ही क्यों न हो — दोनों जगह अपने आपको पूरी तरह सुरक्षित समझने लगें। किसी भी राज्यमें न तो किसी जातिपर खास मेहरबानी की जायगी और न किसी जातिको दबाया या कुचला जायगा। सब लोगोंको अपना धार्मिक भेद भूल जाना चाहिये। मैं अिसी मकसदसे काम कर रहा हूँ। मैं अिस ढंगसे काम करता हूँ, जिससे हर राज्यके बहुमतवाले लोग आगे बढ़ें और अैसी हालत पैदा करें कि वहाँकी जनता आज़ादीका अुपभोग कर सके।

किसीने गांधीजीसे पूछा: 'क्या यह संभव है कि आपके अुपवासका असर समाजको नुकसान पहुँचानेवाले गुण्डोंपर भी पड़े? आज फिरसे जो दंगा शुरू हुआ है, अुसमें अिन्हीं लोगोंका बोलबाला है। क्या आपके अिस अुपवाससे अिन गुण्डोंके दिल भी बदले जा सकते हैं?' गांधीजीका जवाब बिलकुल साफ़ और असर डालनेवाला था। अुन्होंने कहा — 'समाजमें गुण्डे अिसलिअे हैं कि हमने अुन्हें अैसा बना दिया है। पिछली अराजकता और अन्धाधुन्धीमें अिन गुण्डोंने समाजमें कैसे अिज्ज़त पा ली, यह समझा जा सकता है। लेकिन अब पाकिस्तानियों और अखण्ड हिन्दुस्तानके हिमायतियोंके बीचकी लड़ाअी खतम हो गअी। अब वह समय आ गया है, जब शान्ति-पसन्द नागरिकोंको आगे बढ़कर समाजमें अपनी जगह बनानी चाहिये और गुण्डोंसे अपना सम्बन्ध तोड़ लेना चाहिये। अहिंसक असहयोग अिसका आम अिलाज है। भलाअी अपने बलपर जिन्दी रहती है, बुराअी नहीं। बुराअी भलाअीके सहारे और अुसके आसपास पनपती है। जब भलाअीका सहारा हटा लिया जाता है, तो बुराअी अपनी मौत मर जाती है। समाजको नुकसान पहुँचानेवाले गुण्डोंके दिल बदलें या न बदलें, लेकिन अुन्हें अितना महसूस करा देना काफी होगा कि समाजके ज्यादा अच्छे लोग शान्ति और व्यवस्था कायम करनेके लिअे आगे आकर अपनी अुचित जगह ले रहे हैं। केन्द्रीय कलकत्तासे आने वाले दोस्तोंको गांधीजीने यह सलाह दी थी: आपको मेरी हमदर्दीमें अुपवास नहीं करना चाहिये। आप कलकत्ताके हर हिस्सेमें सताये हुअे लोगोंके बीच जाअिये और अुन्हें यह भरोसा कराअिये कि वे सुरक्षित हैं। अुन्हें कोअी खतरा नहीं है। शहरके जीवनको फिरसे अैसा बनाअिये कि यह सुरक्षा या सलामती हिन्दुस्तानके नये राज्यका कायमी अंग बन जाय। जाने लायक होता, तो मैं खुद कलकत्ताके हर अेक हिस्सेमें जाकर वहाँकी संस्थाओंके सामने अपने

www.vinoba.in

विचार रखना पसन्द करता। लेकिन मेरा शरीर अिस लायक नहीं है। जब दूसरे लोग काम कर रहे हों, तब मैं आरामसे कैसे बैठ सकता हूँ?

केन्द्रीय कलकत्ताके दोस्तोंके चले जानेके बाद कलकत्ताके वकील-मण्डलका अेक डेपुटेशन आया। अुन्होंने गांधीजीको यह वचन दिया कि मण्डलके सारे मेम्बर फिरसे शान्ति कायम करनेकी भरसक कोशिश करेंगे। बेलियाघाटाके दोस्तोंमें, जिन्होंने कुछ हफ्तों पहले गांधीजीके शान्ति-मिशनको शककी नजरसे देखा था, गांधीजीके अुपवाससे बिजली दौड़ गअी। अब अुन्होंने गांधीजीके मिशनके पूरे महत्वको समझा और पूरी ताक़तके साथ अुजाड़ मुस्लिम बस्तियोंको फिरसे बसानेका काम शुरू किया। जो पत्रकार अुजाड़ घरोंमें लौटनेवाले लोगोंसे मिले, अुन्होंने अुन लोगोंकी अीमानदारी और सावधानीका प्रमाण दिया जिन्होंने वापिस आनेवालोंको कुछ हफ़्ते पहले घरसे निकाल दिया था। गांधीजीके लिअे यह सब खुश करनेवाली खबरें थीं, लेकिन वे अभी अुस हद तक नहीं पहुँचे थे, जहाँ जाकर अुपवास तोड़ा जा सकता था।

शामके समय हिन्दू महासभाके प्रेसिडेण्ट श्री अेन० सी० चटरजी, सेक्रेटरी श्री देवेन्द्रनाथ मुकरजी, "देश-दर्पण"के संपादक सरदार निरंजनसिंग तालिब, मुस्लिम लीगके डॉ० जी० जिलानी, डॉ० अब्दुर रशीद चौधरी और 'पाकिस्तान सीमेन्स यूनियन'के मोहिबुर रेहमान दूसरे कुछ दोस्तोंके साथ गांधीजीको शान्तिकी रिपोर्ट देने और अुनसे अुपवास छोड़नेकी प्रार्थना करनेके लिअे आये। पच्छिमी बंगालके गवर्नर राजाजी, आचार्य कृपलानी, डॉ० पी० सी० घोष और मि० अेच० अेस० सुहरावर्दी भी वहाँ हाजिर थे। अुनकी गांधीजीसे लम्बी बहस हुअी, जिसने गांधीजीको थका दिया। गांधीजीने अुनकी सारी बातें सुनीं और बहसमें ज्यादातर वे ही बोले।

अुन्होंने कहा, कलकत्ताके हिन्दुओं और मुसलमानोंमें फिरसे जो भाअीचारा और दोस्ती पैदा हुअी, अुससे मुझे बड़ा आनन्द हुआ। लेकिन १४ अगस्तसे ही मैं भावुकताके अिस अुफानको बड़ी सावधानी और चिन्तासे देख रहा था। मैं सोच रहा था कि अगर मेल-मिलापकी यह भावना नअी दोस्तीके कारण और समान नागरिकताके नये खयालसे पैदा होनेवाले भाअीचारेके कारण ही है, तो अुसके बढ़नेके और भी ज्यादा आसार दिखाअी देंगे। लोग अुजड़ी बस्तियोंको बसानेकी पूरी पूरी कोशिश करेंगे। लेकिन यह चीज कहीं दिखाअी नहीं दी। साम्प्रदायिक आग फिर भड़की। अिसलिअे मुझे अुपवास करना जरूरी मालूम हुआ। आखिर भगवानने मुझे साम्प्रदायिक शान्तिके लिअे काम करने और मरनेकी ताकत दे दी। अगर समाजमें नुकसान पहुँचानेवाले लोग हैं, अगर कोअी गुण्डा या बदमाश समाजमें किसी हिन्दू या मुसलमानको लूटता या अुसका खून करता है, तो संभव है मेरे अुपवासका अुस पर कोअी असर न हो। मैं अपनी सीमा और ताकतको जानता हूँ। मैं दोनों जातियोंमें मेल-मिलाप कायम करनेके लिअे अुपवास करता हूँ। शहरमें पिछले २४ दिनोंसे जो विवेक और समझदारी दिखाअी दी, वह मेरे लिअे काफी नहीं थी। अगर आप लोग मुझे यह यकीन दिलाना चाहते हैं कि यह शान्ति सच्ची है और हमेशा बनी रहेगी, तो आपसे मैं यह आशा करूँगा कि आप लेखीमें मुझे यह वचन दें। अुसमें यह लिखा होना चाहिये—'मान लीजिये कि शहरमें फिर हिन्दू-मुस्लिम दंगे शुरू हुअे, तो हम आपको यह यकीन दिलाते हैं कि हम अुन्हें शान्त करनेमें अपनी जान भी दे देंगे।' अगर आप लोग यह मंजूर करते हैं, तो मेरे अुपवास तोड़नेके लिअे यह काफी होगा। आपको कलसे ही अैसा काम करना चाहिये कि सच्ची शान्ति और समान नागरिकता कलकत्ताके जीवनका खास अंग बन जायँ। दूसरी जगह क्या हो रहा है, अिसकी आपको परवाह नहीं होनी चाहिये। आजसे साम्प्रदायिक शान्ति आपकी जिन्दगीका सबसे बड़ा काम बन जाना चाहिये। आगेसे आपके दूसरे कामोंको दूसरा स्थान मिलना चाहिये।

अेक दूसरी शर्त भी थी, लेकिन वह तो मौजूदा हालतके साथ जुड़ी हुअी थी। अुन्होंने कहा, बिहार और नोआखालीकी तरह कलकत्तामें भी मैं अपना अुपवास तुड़वानेवाले दोस्तोंसे यह कह देना चाहता हूँ कि अगर कलकत्तामें फिरसे साम्प्रदायिक पागलपन शुरू हुआ, तो हो सकता है कि मैं आमरण अुपवास करूँ। यह अुपवास समाजके ज्यादा अच्छे, शान्ति-पसन्द और समझदार लोगोंको काममें जुटानेके लिअे, मनकी जड़तासे अुन्हें छुटकारा दिलानेके लिअे और भलाअीको सक्रिय बनानेके लिअे किया गया है।

अपनी जिम्मेदारीकी गहराअीको समझकर वे दोस्त दूसरे कमरेमें गये। वहाँ अुनमें खुले दिलसे चर्चा हुअी। शक-शुबहोंको खुले आम जाहिर किया गया। साफ़ शब्दोंमें अिस डरपर भी चर्चा की गअी कि संभव है प्रतिज्ञापर दस्तखत करनेवाले लोग अुस अूँचाअी तक नहीं पहुँच सकें, जिसकी अुनसे आशा की जाती है। अन्तमें दस्तावेज पर पूरी समझ-बूझके साथ दस्तखत करनेका फैसला किया गया।

गांधीजीको अिससे बड़ी खुशी हुअी। अुन्होंने दस्तखत करनेवालोंके वचनपर विश्वास किया और भगवानसे प्रार्थनाकी कि वह अगले दिनसे ही अुन लोगोंको जीवनमें अपने दिये हुअे वचनपर अमल करनेकी हिम्मत और ताकत दे। यह प्रार्थना करते करते अुन्होंने कल रात अपना अुपवास तोड़ा। अब बंगालके लोगोंपर गांधीजीकी मौजूदगीमें दिये गये पवित्र वचनको पूरा करनेकी भारी जिम्मेदारी आअी है। भगवान हमें अुसे पूरा करनेके लिअे जरूरी समझ, जरूरी ताकत और जरूरी लगन दे!

कलकत्ता, ५-९-'४७
(अंग्रेजीसे)

निर्मल कुमार बसु

कलकत्तामें

(पृष्ठ २६७से आगे)

गांधीजीने गहरी भावुकतासे यह बात कही थी। अुसके बाद सब लोग बिलकुल खामोश रहे। शहीद साहबने खामोशी तोड़ते हुअे कहा—"आपने कहा था कि जब कलकत्ता पागलपन छोड़ देगा, तो मैं अुपवास तोड़ दूँगा। वह शर्त पूरी हो गअी। क्या अिस अैलानपर दस्तखत करनेकी बात कहकर आप नअी शर्तें हमपर नहीं लाद रहे हैं?" अिस 'कानूनी दलील'के जवाबमें गांधीजीने कहा; कोअी नअी शर्त नहीं लादी गअी है। अिसकी सारी बातें अुपवासकी असल शर्तोंमें आ जाती हैं। अिस समय मैंने जो कुछ कहा है, वह तो अिसलिअे कि आप सच्ची बात अच्छी तरह जान लें। अगर आपकी भावुकता और आपके विश्वासमें पूरा-पूरा मेल हो, तो अिस अैलानपर दस्तखत करनेमें आपको कोअी कठिनाअी नहीं मालूम होनी चाहिये। यह आपकी अीमानदारी और हिम्मतभरे विश्वासकी खरी कसौटी है। लेकिन अगर आप मुझे जिन्दा रखनेके लिअे ही अिसपर सही करेंगे, तो आप मेरी मौतका ही अिन्तजाम करेंगे। अिस तरह आप मुझे मौतसे हमेशाके लिअे नहीं बचा सकेंगे।"

डेपुटेशनके हर मेम्बरने अिस चेतावनीकी गहराअीको महसूस किया। राजाजी और आचार्य कृपलानीने, जो अिस चर्चाके बादके हिस्सेमें आ पहुँचे थे, यह प्रस्ताव रखा कि हम लोग गांधीजीको थोड़ी देरके लिअे अकेले छोड़ दें और मिलकर सलाह करनेके लिअे पासके कमरेमें चलें। शहीद साहबने अिस सुझावका समर्थन किया। वे सब जाने ही वाले थे कि अितनेमें नारकेलडंगा, सितलाताला, मानिकटोला, और कंकिरगाचीमें रहनेवाले हिन्दू और मुसलमानोंके क़रीब ४० नुमाअिन्दोंके दस्तखतवाली अेक अपील गांधीजीके सामने लायी गअी। अपीलमें दस्तखत करनेवाले लोगोंने कसम खाअी थी कि हम अिन मोहल्लोंमें, जिनको पिछले दंगोंमें सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचा था, कोअी बुरी घटना न होने देंगे। हम आपसे सच्चे दिलसे यह प्रार्थना करते हैं कि आप अपना अुपवास तोड़ दें। हम यह भी कहना चाहेंगे कि १४ अगस्त, १९४७ से आज तक मिलीजुली आबादीवाले अिन हिस्सोंमें कोअी वारदात नहीं हुअी है। शहीद साहबने अपीलको पढ़कर

www.vinoba.in

कहा — "तो हमारी कोशिश बेकार नहीं गअी।" "हाँ, भगवान हमारी मदद कर रहा है" — गांधीजीने कहा।

शहीद साहबने फिर कहा — "अब चूँकि मुसलमान भी आपसे अपील कर रहे हैं, क्या आप अपना अुपवास नहीं तोड़ेंगे? अिससे मालूम होता है कि अुन्होंने आपके अमन और शान्तिके मिशनको पूरी तरह मान लिया है, हालाँकि मौजूदा दंगोंमें अुन्हींको तकलीफें सहनी पड़ी हैं। यह बात और भी ज़्यादा ताज्जुबकी अिसलिअे है कि अेक समय वे आपको अपना पक्का दुश्मन समझते थे। लेकिन आपने अुनकी जो सेवाअें की हैं, अुनसे अुनके दिलपर अैसा असर हुआ है कि आज वे आपको अपना दोस्त और मददगार मानने लगे हैं।"

यह शानदार बात थी और बड़ी शानसे कही गअी थी। समयकी बातें बोलनेमें कभी किसीसे पीछे न रहनेवाले राजाजीने तुरत कहा—"अगर मैं भाषाको बदलूँ, तो कहूँगा कि गांधीजी आज हिन्दुओंके बनिस्बत मुसलमानोंके हाथमें ज्यादा सुरक्षित हैं।"

गांधीजीने शब्दोंकी अिस होड़में दिलचस्पी ली और अपनी टीकाके लिअे शहीदसाहबकी अुसी बातको चुना, जिसमें मुसलमानोंको 'सताअी हुअी पार्टी' बताया गया था। अुन्होंने कहा, मैं 'सताअी हुअी पार्टी' शब्दोंको पसन्द नहीं करता। मुसलमानोंको सताअी हुअी पार्टी मानकर अुनके बारेमें मत सोचिये। हमारे आजके शान्ति-मिशनका यही सार है कि हम बीती बातोंको भूल जायँ। मैं यह नहीं चाहता कि मुसलमान पच्छिमी बंगालमें अपने आपको हिन्दुओंसे कम दरजेके और अुनके अधीन मानें। जब तक हम अिस भेदको भूलेंगे नहीं, तब तक हम कोअी ठोस काम नहीं कर सकेंगे।

अिसके बाद वे सब पासके कमरेमें चले गये और गांधीजीको, जिन्हें बातचीतके दूसरे हिस्सेमें कमजोरी और अुबकाअी सताने लगी थी, अकेले आराम करनेके लिअे छोड़ दिया गया।

पासके कमरेमें जो सलाह-मशविरा हुआ, अुसमें शहीद साहबने बड़ी सावधानीसे और सीमामें रहकर बात की। अिससे अुनकी अीमानदारी और जिम्मेदारीका खयाल जाहिर होता था। आचार्य कृपलानी रूखेपनसे मजाक करते रहे। और, मौका देखकर काम करनेवाले, लोगोंको समझाने-बुझानेकी ताकत रखनेवाले और भले-बुरेको परखनेवाले राजाजीने दलीलोंकी आड़में अपनी भावुकताको छिपा रखा। चर्चा बहुत छोटी थी, फिर भी सोच-समझकर की गअी थी। राजाजीने प्रतिज्ञाका मसविदा लिखाया, जिसपर सबसे पहले श्री अेन० सी०० चटरजीने, फिर श्री देवेन मुकरजीने और बादमें शहीद साहब, श्री आर० के० जैदका, सरदार निरंजनसिंह तालिब और दूसरोंने दस्तखत किये। अिसी बीच हथियारों और हाथसे फेंके जानेवाले बमोंसे भरी अेक मोटर वहाँ आअी। वे हथियार और बम गांधीजीको अुन लोगोंकी तरफसे पछतावेकी निशानीके रूपमें सौंप दिये गये, जिन्होंने विरोधियोंसे बदला लेनेका जंगलीपन दिखाया था। प्रतिज्ञा-पत्रपर दस्तखत करनेवाले लोग जल्दी ही दस्तावेजके साथ गांधीजीके पास लौट आये।

शहीद साहबने गांधीजीसे कहा — "लेकिन मेरे अिस दस्तावेज पर दस्तखत करनेसे क्या फ़ायदा होगा? मुझे किसी भी समय पाकिस्तान में बुलाया जा सकता है। तब मेरी अिस प्रतिज्ञाका क्या होगा?"

गांधीजीने जवाब दिया — "अैसा होनेपर आपको यह विश्वास रखना चाहिये कि अपने पीछे आप जिन्हें यहाँ छोड़ जायँगे, वे अपना वादा पूरा करेंगे। अिसके सिवा, आप वहाँसे लौट भी सकते हैं।"

शहीद साहबने कहा — "मैं आपको धोखा नहीं देना चाहता और न मैं कभी जान-बूझकर अैसा करूँगा।" अिस तरह शहीद साहबने जो बहुत ज्यादा सावधानी दिखाअी, अुसकी गांधीजीने बड़ी तारीफ़ की।"

गांधीजीने अन्तमें कहा — "अच्छा, अब मैं अपना यह अुपवास तोड़ दूँगा और कल पंजाबके लिअे रवाना हो जाअूँगा। "तीन दिन पहलेके बनिस्बत आज मैं ज्यादा बड़ी ताकत और विश्वासके साथ वहाँ जाअूँगा।"

शहीद साहबने बीचमें ही कहा — "आप कल नहीं जा सकते। आपको अिस शान्तिको ठोस बनानेके लिअे कमसे कम दो दिन और यहाँ ठहरना होगा।" दूसरोंने शहीद साहबका समर्थन किया। मौजूदा कमजोरीमें गांधीजीके रेलयात्रा करनेके बारेमें गहरी चिन्ता दिखानेके सिवा मनकी सबसे बड़ी बात अुन्होंने गांधीजीसे नहीं कही। अुन्होंने यह नहीं कहा कि बिहार और दूसरी जगहोंके, निजामको न माननेवाले लोग अंध भक्तिसे गांधीजीका जय-जयकार करके अुन्हें बहुत ज्यादा सतायेंगे।

अिसलिअे फिलहाल गांधीजीके रवाना होनेके लिअे शनिवारका दिन तय किया गया।

अिसी बीच डॉ० दिनशा मेहता नारंगीका रस तैयार करनेके लिअे चले गये। अुपवास तोड़नेके पहले हमेशाके रवैयेके मुताबिक गांधीजीने प्रार्थना कराअी। लेकिन न तो मैं और न मेरे दोस्त श्री चारुभूषण चौधरी अन्तके अिस आनन्दभरे दृश्यको देखनेके लिअे वहाँ ठहर सके। हमें गांधीजीने अेक काम सौंप दिया था, जिसे ढाकामें जाकर पूरा करना था। मैंने अपने दोस्तसे, जो अभी तक वहाँ ठहरनेके लालचको नहीं दबा पाये थे, धीरेसे कहा — "अगर हम गाड़ी चूक गये, तो हमारी मुसीबत आ जायगी।" अिसलिअे हम दोनों जल्दीसे अुस मोटरमें चढ़ गये, जो हमें स्यालदा स्टेशनपर ले जानेके लिअे खड़ी थी। अुस समय गुरुदेवका गीत 'जीवनका रस जब सूख जाय, करुणा बरसाते आओ' और रामधुन हवामें गूँज रहे थे।

कलकत्ता और ढाका, ५–६ सितंबर, १९४७
(अंग्रेजीसे)

प्यारेलाल

गांधीजीका अखबारी बयान

आपको यह रिपोर्ट देते हुअे मुझे अफसोस होता है कि पिछली रातको कुछ नौजवान मेरे पास अेक आदमीको लाये, जिसे पट्टी बँधी हुअी थी। मुझसे कहा गया कि अुस आदमीपर किसी मुसलमानने हमला किया है। प्रधान-मंत्रीने अुसकी जाँच कराअी, तो पता चला कि अुसके शरीरपर चाकूके कोअी निशान नहीं थे, जैसा कि अुन लोगोंने बतलाया था। यहाँपर खास बात यह नहीं है कि अुस आदमीको लगी हुअी चोट कितनी भयंकर थी। जिस बातपर मैं ज़ोर देना चाहता हूँ, वह यह है कि अिन नौजवानोंने खुद ही न्यायाधीश और खुद ही सज़ा देनेवाले बननेकी कोशिश की।

यह कलकत्ता-टाअिमके मुताबिक़ १० बजे रातकी बात है। वे लोग बड़े ज़ोर-शोरसे चिल्लाने लगे। मेरी नींदमें विघ्न पड़ चुका था, मगर क्या हो रहा है, अिस बातको न जानते हुअे मैंने चुपचाप पड़े रहनेकी कोशिश की। मैंने खिड़कीके काँचोंके टूटनेकी आवाज़ सुनी। मेरे दोनों तरफ़ दो बहुत बहादुर लड़कियाँ लेटी हुअी थीं। वे सोअी नहीं थीं। मेरे बिना जाने — क्योंकि मेरी आँखें बन्द थीं — वे अुस छोटी-सी भीड़में गअीं और अुसे शान्त करनेकी अुन्होंने कोशिश की। भगवानको धन्यवाद है कि अुस भीड़ने अुन्हें कोअी नुक़सान नहीं पहुँचाया। अुस परिवारकी बूढ़ी मुस्लिम महिला, जिसे सब बड़े प्रेमसे बी अम्मा कहते थे और अेक मुस्लिम नौजवान, शायद खतरेसे मेरी हिफ़ाज़त करनेके लिअे, मेरे बिस्तरके पास आकर खड़े हो गये। भीड़का शोर-गुल बढ़ता ही गया। कुछ लोग बीचके बड़े कमरेमें घुस आये और कअी दरवाज़ोंको धक्के मारकर खोलने लगे। मैंने महसूस किया कि मुझे अुठकर गुस्सेसे भरी हुअी अुस भीड़के सामने ज़रूर जाना चाहिये। मैं अुठा और अेक दरवाज़ेकी देहलीज़पर जाकर खड़ा हो गया। दोस्तोंने मुझे घेर लिया और आगे जानेसे मुझे रोकने लगे। मैं अपने मौन-व्रतको अैसे मौकोंपर तोड़ देता हूँ। अिसलिअे मैंने अपना मौन तोड़कर गुस्सेसे भरे हुअे अुन नौजवानोंसे शान्त होनेकी अपील करना शुरू किया। मैंने कहा गांधीकी बंगाली

www.vinoba.in

पत्नी आभासे कहा कि वह मेरे कुछ शब्दोंका बंगालीमें तरजुमा कर दे। वह भी किया गया, मगर कोअी फ़ायदा नहीं हुआ। अुन लोगोंने समझदारीकी कोअी भी बात सुननेके खिलाफ़ जैसे अपने कान बन्द कर लिये थे।

मैंने और कुछ न करके हिन्दू ढंगसे अपने दोनों हाथ जोड़े। और ज़्यादा खिड़कियोंके काँच टूटनेकी आवाज़ आने लगी। अुस भीड़में जो दोस्ताना रुखवाले लोग थे, अुन्होंने भीड़को शान्त करनेकी कोशिश की। पुलिस अफ़सर भी वहाँ मौजूद थे। अुनके लिअे यह तारीफ़की बात है कि अुन्होंने अपनी सत्ताका अुपयोग करनेकी कोशिश नहीं की। अुन्होंने भी भीड़से शान्त होनेकी अपील करते हुअे अपने हाथ जोड़े। मुझपर लाठीका अेक वार हुआ, जो मुझे और मेरे आसपास खड़े हुअे लोगोंको लगते-लगते बचा। मुझे निशाना बनाकर फेंकी गअी अेक अींट मेरे पास खड़े हुअे अेक मुसलमान दोस्तको लगी। वे दो लड़कियाँ मुझे ज़रा-सी देरके लिअे भी नहीं छोड़ना चाहती थीं और आखिर तक वे मेरे पास बनी रहीं। अितनेमें पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट और अुनके अफ़सर भीतर आये। अुन्होंने भी ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं की। अुन्होंने मुझसे दरखास्त की कि मैं भीतर चला जाअूँ। तब अुन्हें अुन नौजवानोंको शान्त करनेका मौक़ा मिलेगा। कुछ देर बाद भीड़ वहाँसे हट गअी।

अहातेके फाटकके बाहर जो कुछ हुआ, अुसके बारेमें मैं सिर्फ़ अितना ही जानता हूँ कि भीड़को हटानेके लिअे पुलिसको अश्रुगैसका अिस्तेमाल करना पड़ा था। अिसी बीच डॉ० पी० सी० घोष, आनन्द बाबू और डॉ० नृपेन भीतर आये और मुझसे कुछ चर्चा करनेके बाद चले गये। दूसरे दिन मेरा नोआखाली जानेका अिरादा था, अिसलिअे खुशकिस्मतीसे शहीद साहब अुसकी तैयारी करनेके लिअे अुस दिन अपने घर चले गये थे। अूपर दी हुअी बेहूदा घटनाका खयाल करके मैं कलकत्ता छोड़कर नोआखाली जानेकी बात सोच भी न सका, क्योंकि वह घटना कलकत्ताको किस हालतमें पहुँचा देगी, यह कोअी नहीं कह सकता था।

अिस घटनाका सबक़ क्या है? मैं साफ़ तौरपर समझ गया हूँ कि अगर हिन्दुस्तानको महँगे दामों हासिल की हुअी अपनी आज़ादीको टिकाये रखना है, तो सब मर्दों और औरतोंको मारपीट और ज़ोर-ज़बरदस्तीके कानूनको पूरी तरह भूल जाना होगा। जो कोशिश की गअी है, वह तो सिर्फ़ अिसकी लापरवाही-भरी नकल मात्र है। अगर मुसलमानोंने बुरा बरताव किया था, और अिसकी शिकायत करनेवाले लोग मंत्रियोंके पास नहीं जाना चाहते थे, तो वे मेरे पास या मेरे दोस्त शहीद साहबके पास आ सकते थे। यही बात अुन मुसलमानोंपर भी लागू होती है, जिन्हें कोअी शिकायत करनी है। अगर सभ्य समाजके बुनियादी नियमोंपर अमल नहीं किया जाता, तो कलकत्ता या दूसरी किसी भी जगह शान्ति बनाये रखनेका कोअी रास्ता नहीं है। जनता, पंजाबमें या हिन्दुस्तानके बाहर होनेवाले वहशियाना कामोंपर ध्यान न दे। यह सुनहला नियम सबपर अेक ही रूपमें लागू होता है कि कोअी शख़्स कानूनको कभी भी अपने हाथमें न ले।

मेरे सेक्रेटरी देवप्रकाशने, जो पटनामें हैं, तारके ज़रिये मुझे यह खबर दी है—'पंजाबकी घटनाओंसे जनतामें अुत्तेजना है। अखबारोंको और जनताको अुनके फ़र्ज़की याद दिलानेवाला आपका बयान ज़रूरी मालूम होता है।' श्री देवप्रकाश कभी बिना कारण अुत्तेजित नहीं होते। अखबारोंमें ज़रूर कुछ ग़ैर-ज़िम्मेदार शब्द निकले होंगे। अिस वक़्त जब कि हम बारूदखाने पर बैठे हुअे हैं, चौथी स्टेट—प्रेस—को बहुत ज़्यादा समझदार और मौन होनेकी ज़रूरत है। अिस वक़्तका अविवेक चिनगारीका काम करेगा। मुझे अुम्मीद है कि हरअेक सम्पादक और सम्वाददाता पूरी तरह अपने फ़र्ज़को समझेगा।

मुझे अेक बात यहाँ ज़रूर कह देनी चाहिये। पंजाबसे मुझे अेक ज़रूरी संदेशा मिला है कि मैं जल्दी-से-जल्दी वहाँ पहुँचूँ। मैं कलकत्तामें होनेवाली अशान्तिके बारेमें सब क़िस्मकी अफ़वाहें सुनता हूँ। मुझे अुम्मीद है कि अगर वे बिलकुल बेबुनियाद नहीं हैं, तो बढ़ाचढ़ाकर ज़रूर कही गअी हैं। कलकत्ताके लोगोंको फिरसे मुझे विश्वास दिलाना होगा कि यहाँ कोअी गड़बड़ी नहीं होगी और जो शान्ति अेक बार क़ायम हो चुकी है, वह भंग नहीं होगी।

पिछली १४ अगस्तसे जब यहाँ शान्ति नज़र आअी, तभी से मैं कहता आया हूँ कि यह सिर्फ़ थोड़े ही दिनोंकी शान्ति हो सकती है। अिस शान्तिके कायम होनेका कारण कोअी चमत्कार नहीं था। क्या मेरी आशंका सच साबित होगी और कलकत्तामें फिरसे वहशियाना वारदातें होने लगेंगी? हम अुम्मीद करें कि अैसा नहीं होगा। हम प्रभुसे प्रार्थना करें कि वह हमारे दिलोंको छू दे, ताकि हम अपने पागलपनको फिरसे न दोहरावें।

अूपरकी बातें लिखनेके बादसे, यानी क़रीब चार बजेके बादसे शहरके अलग-अलग हिस्सोंमें होनेवाली घटनाओंका पूरा पूरा हाल मेरे पास आ रहा है। कुछ जगहें, जो कल तक सुरक्षित थीं, अचानक खतरनाक बन गअी हैं। कअी लोग मारे गये हैं। मैंने दो बहुत ग़रीब मुसलमानोंकी लाशें देखीं। मैंने कुछ फटेहाल मुसलमानोंको किसी हिफ़ाज़तकी जगहकी तरफ़ गाड़ियोंमें हटाये जाते हुअे देखा। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि पिछली रातकी जिन घटनाओंका अितने विस्तारसे अूपर बयान किया गया है, वे अिस आगके सामने बहुत मामूली हैं। अिस खुली आगमें घुसकर मैं जो कुछ करूँ, अुसमेंसे अेक भी अैसी बात मुझे नज़र नहीं आती, जो अिस आगको क़ाबूमें कर सके।

जो दोस्त मुझे शामको मिले थे, अुन्हें मैंने बतला दिया है कि अिस वक़्त अुनका फ़र्ज़ क्या है। दंगेको रोकनेके लिअे मुझे क्या करना चाहिये? सिक्खों और हिन्दुओंको भूलना नहीं चाहिये कि अिन कुछ दिनोंमें पूरबी पंजाबने क्या किया है। अब पच्छिमी पंजाबके मुसलमानोंने अपने पागलपन-भरे काम शुरू किये हैं। कहा जाता है कि पंजाबकी वारदातोंसे सिक्ख और हिन्दू गुस्सा हो अुठे हैं।

मैं अूपर बतला चुका हूँ कि पंजाबसे मुझे ज़रूरी बुलावा आया है, मगर जब कलकत्तामें दंगेकी आग फिरसे भड़की हुअी जान पड़ती है, तब मैं कौनसा मुँह लेकर पंजाब जा सकता हूँ? अभी तक जो हथियार मेरे लिअे अचूक साबित हुआ है, वह है अुपवास। ज़ोरज़ोरसे चिल्लाती हुअी भीड़के सामने जाकर खड़े हो जाना हमेशा काम नहीं देता। पिछली रातको अुससे सचमुच कोअी फायदा नहीं हुआ। जो काम मेरे मुँहसे निकले हुअे शब्द नहीं कर सकते, अुसे शायद मेरा अुपवास करदे। अगर कलकत्ताके सारे दंगाअियोंके दिलोंपर अुसका असर हो जाय, तो पंजाबके दंगाअियोंके दिलोंको भी वह छू सकता है। अिसलिअे आज रातको सवा आठ बजे से मैं अपना अुपवास शुरू करता हूँ। वह सिर्फ़ अुसी हालतमें और तभी खत्म होगा जब कलकत्ताके लोग अपना पागलपन छोड़ देंगे। अुपवास के दरमियान जब मेरी पानी पीनेकी अिच्छा होगी, तब मैं हमेशाकी तरह नमक और सोडा-बाअि-कार्ब मिला हुआ पानी लूँगा।

अगर कलकत्ताके लोग चाहते हैं कि मैं पंजाब जाकर वहाँके लोगोंकी मदद करूँ, तो अुन्हें जितनी हो सके अुतनी जल्दी मेरा अुपवास तुड़वाना चाहिये।

कलकत्ता, १–९–'४७

(अंग्रेजीसे)

विषय-सूची पृष्ठ

अेक पाक़ क़ुरबानी	... प्यारेलाल	२६५
स्मृतीश बेनरजी	... निर्मल कुमार बसु	२६५
कलकत्तामें	... प्यारेलाल	२६६
सही या ग़लत?	... गांधीजी	२६८
अुपवास	... निर्मल कुमार बसु	२६९
गांधीजीका अखबारी बयान	...	२७१

www.vinoba.in